NEERAJ®

Serving Education for Last 40 Years

व्यष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धांत–II

(Principles of Microeconomics-II)

B.E.C.C.-132

B.A. General - 2nd Semester

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Prieti Gupta*

NEERAJ
PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

व्यष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धांत–II

(Principles of Microeconomics-II)

Question Paper—June-2023 (Solved) 1-4

Question Paper—December-2022 (Solved) 1-5

Question Paper–Exam Held in February-2021 (Solved) 1-4

Sample Question Paper–1 (Solved) 1

Sample Question Paper–2 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

1. पूर्ण प्रतियोगिता 1
   (Perfect Competition)

2. एकाधिकार 14
   (Monopoly)

3. एकाधिकारी प्रतियोगिता 26
   (Monopolistic Competition)

4. अल्पाधिकारी 36
   (Oligopoly)

5. साधन बाजार और मूल्य निर्धारण 47
   (Factor Markets and Pricing Scenario)

6. श्रम बाजार 63
   (Labour Market)

7. भूमि बाजार 75
(Land Market)

8. क्षेम (कल्याण) अर्थव्यवस्थाएं : पूर्ण प्रतियोगिता में आवंटन क्षमता 87
(Welfare Economics: Allocative Efficiency under Perfect Competition)

9. बाजार व्यवस्था तथा बाजार की विफलता 100
(Market Mechanism and Market Failure)

10. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के सिद्धांत 117
(International Trade Theories)

11. व्यापार नीति और विश्व व्यापार संगठन 133
(Trade Policy and World Trade Organisation)

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

व्यष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धांत–II

(Principles of Microeconomics–II)

B.E.C.C.-132

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *प्रत्येक भाग से निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर लिखिए।*

भाग-क

नोट : इस भाग से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

प्रश्न 1. (क) एक पूर्ण प्रतियोगिता में फर्म का पूर्ति वक्र उसके सीमान्त लागत वक्र का बढ़ता हुआ भाग, जो औसत परिवर्ती लागत (AVC) वक्र के ऊपर होता है, ही क्यों होता है? एक आरेख की सहायता से वर्णन कीजिए।

उत्तर–किसी पूर्ण प्रतियोगी फर्म के किसी बाजार में बने रहने या बाजार से बाहर चले जाने संबंधी निर्णयन के लिए एक पूर्ण प्रतियोगी फर्म तथा पूर्ण प्रतियोगी बाजार के पूर्ति वक्र की अवधारणा पर नए सिरे से विचार किए जाने की आवश्यकता है। अल्पकाल एवं दीर्घकाल में पूर्ण प्रतियोगी फर्म के आपूर्ति वक्रों में ये सुधार महत्त्वपूर्ण होंगे–

(क) पूर्ण प्रतियोगी फर्म का अल्पकालीन आपूर्ति वक्र MC वक्र का वह भाग है, जो AVC वक्र से ऊपर है।

(ख) दीर्घकाल में पूर्ण प्रतियोगी फर्म का आपूर्ति वक्र MC वक्र का वह भाग है, जो ATC से ऊपर है, क्योंकि कोई भी फर्म असीमित समय तक घाटा वहन नहीं कर सकती और सभी लागतें पूरी न होने पर अंततः बाजार से बाहर हो जाएगी।

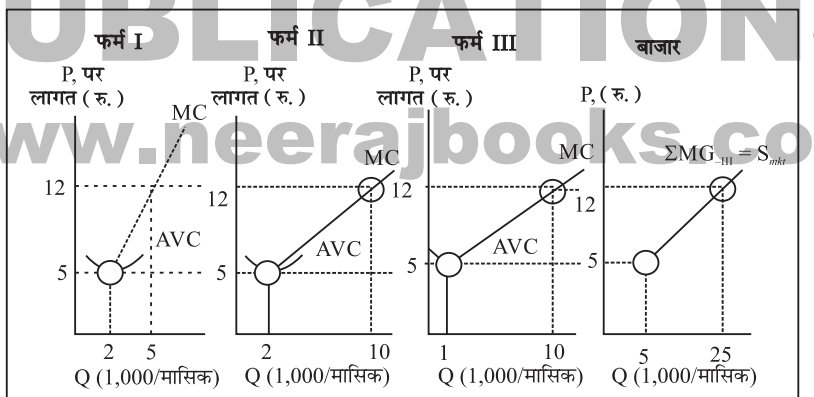

पूर्ण प्रतियोगी फर्म और बाजार का पूर्ति व्रक ($\Sigma MC_{PCM\ firms}$ = बाजार पूर्ति)

अल्पकाल में AVC से ऊपर के किसी भी संभावित भाग पर फर्म आपूर्ति करती रहेगी। इस स्थिति पर बाजार आपूर्ति वक्र व्युत्पन्न किया जा सकता है। चित्र में यह मानकर चला गया है कि तीन फर्मों (फर्मों की संख्या कितनी भी हो सकती है) से युक्त एक बाजार है। इन फर्मों की सीमांत लागतें तथा औसत लागतें अलग-अलग हैं। चूँकि MC वक्र इन फर्मों के विभिन्न कीमत स्तरों पर इनके उत्पादनों का योग करने पर बाजार/उद्योग का आपूर्ति वक्र प्राप्त होता है। यहां से आपूर्ति वक्र रु. 5 की कीमत पर 5,000 इकाइयां प्रति माह से लेकर रु. 12 कीमत पर 25,000 इकाइयां प्रति माह तक दर्शा रहा है।

बढ़ती हुई सीमांत लागत की अवधारणा के साथ लाभ को अधिकतम करने की शर्त के साथ MC = MR से फर्म का आपूर्ति वक्र तथा विभिन्न फर्मों के पूर्ति वक्रों का क्षैतिजिक योग उद्योग/बाजार का आपूर्ति वक्र है। जब कोई फर्म AR = AC बिंदु पर सामान्य

www.neerajbooks.com

लाभ अर्जित कर रही होती है, तो इसे उत्पादन का लाभ-अलाभ बिंदु कहा जाता है। उत्पादन बंद होने का बिंदु, वह बिंदु है जहां फर्म बाजार से बाहर निकल जाने की स्थिति में होती है। यह उत्पादन का वह स्तर है, जहां फर्म को उत्पादन जारी रखना समान रूप से खर्चीला है। ऐसे में फर्म बाजार से बाहर जा सकती है। यदि फर्म अपने उत्पादन से सभी परिवर्तनशील लागतों तथा स्थिर लागतों का कुछ अंश (विफल लागतें) प्राप्त करने की स्थिति में है, तो उसे अभी भी बाजार में बने रहने का प्रोत्साहन मिल रहा है। यदि कीमत औसत परिवर्तनशील लागत से भी नीचे चली जाती है, तो फर्म परिवर्तनशील लागतें भी प्राप्त नहीं कर पाएगी और बाजार से बाहर हो जाएगी। इसलिए ऐसा बिंदु जहां फर्म बाजार में बने रहने या बाजार से बाहर जाने का निर्णय लेती है, वह है, जहां (AR = AVC. फर्म के लिए यह उत्पादन बंद करने का बिंदु है।

(ख) एक अल्पाधिकारी फर्म विकम्पित मांग वक्र का सामना क्यों करती है? अल्पाधिकार के विकम्पित मॉडल में कीमत निर्धारण दर्शाइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-41, प्रश्न-4

प्रश्न 2. (क) 'लगान' (किराया) के आधुनिक सिद्धांत का वर्णन कीजिए। समझाइए कि किस प्रकार कारक की पूर्ति लोच लगान को प्रभावित करती है। आरेख का उपयोग कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-82, प्रश्न-6

(ख) उत्पादन के कारकों (factors of production) का सीमान्त उत्पादकता सिद्धांत क्या है? यह कारकों की कीमत निर्धारण प्रक्रिया को किस प्रकार समझाता है।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-52, प्रश्न-4, पृष्ठ-53, प्रश्न-5

प्रश्न 3. (क) सार्वजनिक वस्तुओं को परिभाषित कीजिए। सार्वजनिक वस्तुओं की स्थिति में सरकार के हस्तक्षेप का औचित्य समझाइए।

उत्तर–सार्वजनिक पदार्थों को ऐसे उत्पादित पदार्थ के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिनका उपभोग किसी एक व्यक्ति द्वारा न करके समाज के सभी सदस्यों द्वारा समान रूप से किया जाता है। सार्वजनिक पदार्थों की सीमांत लागत शून्य के बराबर होती है। सार्वजनिक पदार्थों में साधारणतया कानून, पार्क, सड़कों पर रोशनी आदि की व्यवस्था को सम्मिलित किया जाता है। सार्वजनिक पदार्थों की समाज और बाजार में आपूर्ति सरकार द्वारा की जाती है, जिनका उद्देश्य जनकल्याण संबंधी न्यूनतम आवश्यकताओं की संपूर्ति करना होता है। सार्वजनिक पदार्थों के उपभोग से किसी व्यक्ति को वंचित नहीं किया जा सकता, परन्तु सार्वजनिक पदार्थों को मुफ्तखोरी की समस्या का सामना करना पड़ता है और निजी उत्पादक की इन पदार्थों के उत्पादन और आपूर्ति में कोई रुचि नहीं होती। अत: सरकार द्वारा एकत्रित करों के माध्यम से सार्वजनिक पदार्थों की आपूर्ति का कार्य सम्भव किया जाता है।

इसे भी देखें–संदर्भ–अध्याय-9, पृष्ठ-101, 'सार्वजनिक पदार्थ और बाजार की विफलता'

(ख) ''एक पूर्ण प्रतियोगिता अर्थव्यवस्था में संसाधनों का परेटो दक्ष आबंटन केवल वहां होगा, जहां–

$$\mathbf{MRTS_{XY} = MRS_{XY} = \frac{P_X}{P_Y}}$$

होगा।'' उपयुक्त चित्र की सहायता से समझाइए।

उत्तर–पूर्ण प्रतियोगी अर्थव्यवस्था में वस्तु X एवं वस्तु Y की कीमतों का अनुपात (p_x/p_y) सभी आर्थिक एजेंटों के लिए अदला-बदली की सामूहिक दर (common rate of trade-off) प्रदान करता है, जिस पर वे समायोजन करते हैं, क्योंकि व्यक्तियों के उपयोगिता अधिकतमीकरण निर्णयों एवं फर्मों के लाभ-अधिकतमीकरण निर्णयों, दोनों में ही कीमतों को स्थायी प्राचल माना जाता है। ऐसी स्थिति में X और Y के बीच लेन-देन की सभी दरें बाजार में कीमतों के अनुपात के बराबरी होंगी।

$$\text{MRTS}_{x,y} = \text{MRS}_{x,y} = \frac{p_x}{p_y}$$

यद्यपि PP वक्र के सभी बिंदुओं पर उत्पादन संयोग तकनीकी रूप से दक्ष है, लेकिन केवल x^*, y^* संयोग ही पैरेटो अनुकूलतम है। एक पूर्ण प्रतियोगी संतुलन कीमत अनुपात $P^*_x = P^*_y$ अर्थव्यवस्था को पैरेटो दक्ष समाधान की ओर ले जाता है।

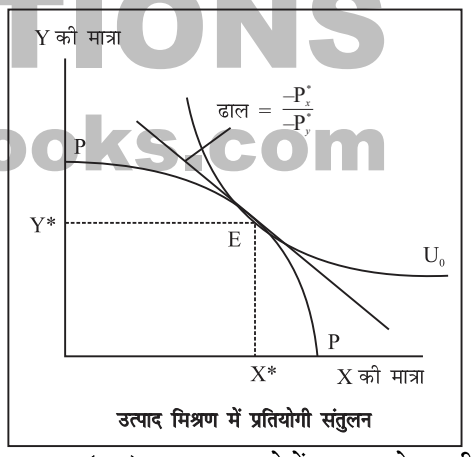

उत्पाद मिश्रण में प्रतियोगी संतुलन

प्रश्न 4. (क) उन प्रमुख क्षेत्रों का उल्लेख कीजिए, जिनमें विश्व व्यापार संगठन ने अपने सदस्यों के बीच समझौतों को सुगम बनाया है।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-135, 'विश्व व्यापार संगठन'

(ख) भारतीय अर्थव्यवस्था पर विश्व व्यापार संगठन के प्रभाव की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-152, प्रश्न-8

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

व्यष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धांत-II

Principles of Microeconomics-II

पूर्ण प्रतियोगिता

(Perfect Competition)

1

परिचय

पूर्ण प्रतियोगिता बाजार के उस रूप का नाम है, जिसमें विक्रेताओं की संख्या की कोई सीमा नहीं होती। फलत: कोई भी एक उत्पादक (विक्रेता) बाजार में वस्तु की कीमत पर प्रभाव नहीं डाल सकता। दीर्घकाल में जब फर्म संसाधनों के प्रयोग में बदलाव ला सकती है, तो वह न्यूनतम लागत पर उत्पादन करने में सफल रहती है। किन्हीं दी गई माँग-पूर्ति की दशाओं में फर्म की आगतें इस बात पर निर्भर करती हैं कि अपने उद्योग में उसे कितनी स्पर्धा या प्रतियोगिता का सामना करना पड़ता है।

अध्याय का विहंगावलोकन

पूर्ण प्रतियोगिता की अवधारणा

पूर्ण प्रतियोगिता की अवधारणा के दो आधारस्तंभ हैं–फर्म का व्यवहार तथा जिस उद्योग में फर्म कार्य करती है, उसका स्वरूप। फर्म कीमत को स्वीकार करती है। यह अपने उत्पादन के स्तर या विक्रय को बदलकर भी कीमत पर कोई प्रभाव नहीं डाल पाती। अत: उसे बाजार में प्रचलित कीमत पर ही संतोष करना पड़ता है।

उद्योग की सबसे बड़ी विशेषता इसमें प्रवेश तथा निर्गमन की स्वतंत्रता है। इसका अर्थ है कि जब चाहे नई फर्म इस उद्योग में आ सकती है तथा कोई पुरानी फर्म अपनी इच्छा से उद्योग छोड़ भी सकती है। वर्तमान फर्में, नई फर्मों को आने से नहीं रोक सकतीं और न ही प्रवेश या निर्गमन पर कोई कानूनी रुकावट होती है।

अल्पकाल और दीर्घकाल दोनों में एक जैसी शर्तें हैं। अंतर केवल इतना है कि अल्पकाल में सामान्य से अधिक लाभ या हानि हो सकती है। ऐसा स्थिर लागतों व फर्मों को उद्योग में प्रवेश करने की या उद्योग छोड़ने की स्वतंत्रता न होना है। दीर्घकाल में न तो असामान्य लाभ होते हैं और न ही कोई हानि। इसके पीछे दो कारण हैं। एक, सभी लागतें परिवर्तनीय होती हैं और उत्पादन न करने की दशा में बचा जा सकता है। दूसरे, फर्मों को उद्योग में आने व उद्योग छोड़ने की स्वतंत्रता होती है। फर्म अपने उत्पादन की कीमत को प्रभावित नहीं कर सकती। इसका आकार बाजार की तुलना में बहुत ही छोटा होने के कारण कीमत पर इसका कोई नियंत्रण नहीं रहता। यह बाजार भाव पर जितना चाहे, उतना माल बेच सकती है। इसी कारण इसका माँग वक्र पूर्णत: लोचशील होता है, परंतु यह बात ध्यान देने योग्य है कि एक पूर्ण प्रतियोगी बाजार की बाजार माँग पूर्णत: लोचशील हो, आवश्यक नहीं।

फर्म का संतुलन

फर्म जिस अवधि में परिवर्तनशील साधनों के प्रयोग में फेरबदल द्वारा अधिकतम लाभ कमाने का प्रयास करती है। इस अवधि में वह स्थिर साधनों की मात्रा नहीं बदल सकती। अत: अल्पकाल में संतुलन की चर्चा करते समय हमें लागतों की दशा भी स्पष्ट रूप से समझ लेनी चाहिए। यदि फर्मों की लागतें भिन्न-भिन्न हों, तो उद्योग की संतुलन स्थिति उस अवस्था से अलग हो जाएगी, जब सभी फर्मों की लागतें एक जैसी रही हों।

अल्पकाल में, पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में फर्मों की संख्या स्थिर होती है। संतुलन कीमत का निर्धारण माँग तथा पूर्ति की समानता द्वारा होता है अर्थात इस कीमत पर,

माँगी गई मात्रा = पूर्ति की गई मात्रा

अति अल्पकाल में पूर्ति स्थिर होती है। इस प्रकार अल्पकाल में कीमत निर्धारण में माँग अधिक सक्रिय होती है। दीर्घकाल में कीमत निर्धारण में पूर्ति अधिक सक्रिय होती है।

आगे दिए गए चित्र में फर्म के संतुलन की तीन संभव दशाओं को दिखाया गया है। यदि यह फर्म साधन बाजार पूर्ण प्रतियोगी खरीदारों में से एक है और वह नियत कीमतों पर समरूप साधन इकाइयाँ प्राप्त कर उत्पादन कार्य करती हैं। पूर्ण प्रतियोगिता व परम्परागत सिद्धांत इसी पूर्वधारणा पर आधारित हैं।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

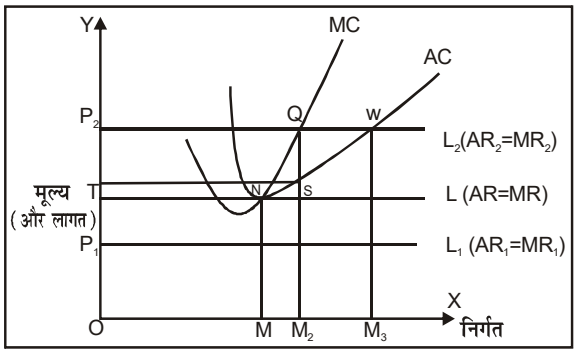

बिंदु N जहाँ MC =AC =AR = MR के अतिरिक्त भी किसी अन्य बिन्दु पर अल्पकालीन संतुलन संभव है। यदि अल्पकाल कीमत $P_2 > P$, तो फर्म OM_2 उत्पादन कर P_2LRS 'अतिशय लाभ' कमा सकती है। यदि अल्पकालीन कीमत $P_1 < P$, तो फर्म सभी लागतें पूरी नहीं कर पाती। फिर भी, यदि कम से कम परिवर्ती लागतें पूरी हो रही हों, तो यह उत्पादन करती रहती है। MC की संतुलन शर्त के अनुसार, उत्पादन का स्तर OM_1 निर्धारित होता है।

दीर्घकाल वह समयावधि है, जिसमें उत्पत्ति के सभी साधन, उत्पादन तकनीक, प्लांट का आकार आदि पूर्णत: आवश्यकतानुसार परिवर्तित किये जा सकते हैं। पूर्ण प्रतियोगिता में एक फर्म दीर्घकाल में उत्पादन को माँग के अनुसार पूर्णरूपेण समायोजित कर सकती है। दीर्घकाल इतनी लम्बी समयावधि है कि कोई भी फर्म उद्योग में प्रवेश कर सकती है अथवा उद्योग को छोड़कर अलग हो सकती है। अत: दीर्घकाल में उद्योग में काम कर रही प्रत्येक फर्म को सामान्य लाभ (Normal Profit) ही प्राप्त होता है। दीर्घकाल में यदि फर्में, लाभ अर्जित कर रही हैं, तो अन्य फर्में लाभ से आकर्षित होकर उस उद्योग में सम्मिलित होंगी, जिसके कारण उद्योग की पूर्ति में वृद्धि होगी।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. बाजार क्या है? इसकी विभिन्न विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–बाजार–बाजार से अभिप्राय किसी दिये गये क्षेत्र में उस व्यवस्था से है, जिसके द्वारा वस्तुओं के क्रय-विक्रय के लिए क्रेता तथा विक्रेता प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सम्पर्क में आते हैं।

बाजार की विभिन्न विशेषताएं–विभिन्न प्रकार के बाजारों की कुछ प्रमुख विशेषतायें इस प्रकार हैं–

1. फर्मों की संख्या–बाजार में फर्मों की अधिक संख्या होती है। बाजार में फर्मों की संख्या कीमत पर नियंत्रण का संकेत देती है। उदाहरण के लिए, यदि बहुत-सी फर्में एक-दूसरे के साथ प्रतियोगिता करती हैं, तो एक फर्म बाजार पूर्ति के एक थोड़े-से ही भाग की पूर्ति करती है, इसलिए यह बाजार पूर्ति को प्रभावित नहीं कर सकती। यह फर्म कीमत को भी अधिक प्रभावित नहीं कर सकती, परन्तु यदि बाजार में केवल एक ही फर्म है, तो वह बाजार पूर्ति की अकेली ही निर्धारक होती है, इसलिए यह कीमत पर भी अधिक नियंत्रण रख सकेगी।

2. फर्मों के प्रवेश तथा बहिर्गमन की स्वतंत्रता–यदि कोई फर्म बाजार में बिना किसी रोक-टोक तथा हानि के आसानी से प्रवेश कर जाती है या बाजार को छोड़कर चली जाती है, तो बाजार में कीमतें स्थिर रहेंगी तथा दीर्घकाल में केवल सामान्य लाभ ही प्राप्त होंगे। यदि बाजार में नई फर्मों के आने पर प्रतिबंध लगा हुआ है, तो पुरानी फर्मों के नियंत्रण में वृद्धि होगी तथा लाभ की संभावना भी अधिक होगी, क्योंकि इस स्थिति में फर्मों के मध्य प्रतियोगिता कम हो जाती है।

3. उत्पाद विभेद की मात्रा–इसका तात्पर्य है कि फर्में जो वस्तुएँ प्रस्तुत करती हैं, वे कितनी अनन्य हैं। अनन्यता जितनी अधिक मात्रा में होगी, कीमत निर्णयों पर फर्म का नियंत्रण उतना ही अधिक होगा। यदि कई फर्मों द्वारा प्रस्तुत की गई वस्तुएँ समरूप होती हैं, तो कीमत निर्धारण में व्यक्तिगत फर्मों का नियंत्रण कम हो जाता है।

प्रश्न 2. पूर्ण प्रतियोगिता क्या है? इसकी विभिन्न विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–पूर्ण प्रतियोगिता ऐसी बाजार संरचना है, जिसमें अनेक फर्में एक जैसी वस्तु का विक्रय करती हैं। इस बाजार में फर्मों का प्रवेश तथा निर्गम स्वतंत्र होता है। क्रेताओं तथा विक्रेताओं को बाजार की स्थिति के विषय में पूर्ण जानकारी होती है।

पूर्ण प्रतियोगिता बाजार की विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

(क) विक्रेताओं एवं क्रेताओं की बड़ी संख्या–पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में वस्तुओं तथा उत्पादों के क्रय-विक्रय हेतु बाजार बड़ी आवासीय कॉलोनियों के समीप स्थित होता है तथा उपभोक्ताओं को आकर्षित करने के लिए फुटकर विक्रेता को दुकानों की बनावट तथा सजावट पर अधिक व्यय करना पड़ता है।

(ख) एक जैसे उत्पाद–पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में विक्रय हेतु प्रस्तुत उत्पाद या वस्तु की प्रकृति तथा स्वरूप सामान्तया एक जैसे ही होते हैं, इसलिए प्रस्तुत उत्पाद पूर्ण रूप से एक-दूसरे के स्थानापन्न होते हैं; जैसे–टाटा चाय, रेड लेबल चाय।

(ग) प्रवेश व बहिर्गमन की स्वतंत्रता–पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में प्रवेश एवं बहिगर्मन की पूर्ण स्वतंत्रता होती है अर्थात विद्यमान विक्रेता और उत्पादकों को बाजार में प्रवेश करने व छोड़ने पर कोई प्रतिबंध नहीं होता।

(घ) सामान्य लाभ–बाजार में एकसमान वस्तुओं की उपलब्धता तथा पूर्ण स्थानापन्न वस्तुओं की विद्यमानता के कारण सभी विक्रेताओं को सामान्य लाभ प्राप्त होता है।

(ङ) पूर्ण ज्ञान–पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में क्रेता या उपभोक्ताओं को बाजार में विद्यमान उत्पादों के सन्दर्भ में पूर्ण ज्ञान होता है, जिससे विक्रेता क्रेताओं से मनमाना मूल्य वसूल नहीं कर पाते।

(च) कीमत स्वीकारक–पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में सभी विक्रेताओं के बाजार में प्रचलित कीमतों को स्वीकार करना पड़ता है।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

प्रश्न 3. पूर्ण प्रतियोगिता की दशा में वस्तु का मूल्य किस प्रकार से निर्धारित होता है?

उत्तर–पूर्ण प्रतियोगिता की दशा में मूल्य निर्धारण/पूर्ण प्रतियोगिता में एक फर्म का साम्य–फर्म के साम्य का अर्थ है, उत्पादन की मात्रा में कोई परिवर्तन न होना, प्रत्येक फर्म अपने लाभ को अधिकतम करना चाहती है, जब तक उसको अधिकतम लाभ प्राप्त नहीं होता, वह उत्पादन की मात्रा में परिवर्तन करती रहती है, जहाँ उसको अधिकतम लाभ प्राप्त होता है, उसी बिन्दु पर वह अपने उत्पादन की मात्रा को निश्चित कर देती है अर्थात् यह फर्म साम्य की दशा कहलाती है। पूर्ण प्रतियोगिता में मूल्य निर्धारण को दो भागों में बाँटा जा सकता है–

(क) अल्पकाल में मूल्य निर्धारण–पूर्ण प्रतियोगिता की दशा में प्रत्येक फर्म अपना लाभ अधिकतम करने का प्रयास अवश्य करती है, किन्तु अल्पकाल में इतना कम समय होता है कि फर्म को वस्तुओं की माँग के अनुसार उसकी पूर्ति करने के लिए साधनों की मात्रा में वृद्धि कर उत्पादन बढ़ाने का समय नहीं मिलता। अत: फर्म को उद्योग द्वारा निर्धारित मूल्य पर अल्पकाल में सामान्य लाभ, अधिकतम लाभ अथवा हानि भी हो सकती है। फर्म साम्य की दशा में तब होती है, जब सीमान्त लागत और सीमान्त आगम दोनों बराबर होते हैं अर्थात MR = MC.

(1) अधिकतम लाभ–जब बाजार में माँग, पूर्ति की तुलना में अधिक होती है, तो फर्म को अधिक लाभ प्राप्त होता है। नीचे दिए गए चित्र में E बिन्दु साम्य का बिन्दु है, अत: इस बिन्दु पर फर्म को अधिकतम लाभ प्राप्त होता है। इस बिन्दु पर उत्पादन की मात्रा OQ, कीमत OP तथा लागत OM के बराबर है। इस प्रकार कुल लाभ की मात्रा MPER है।

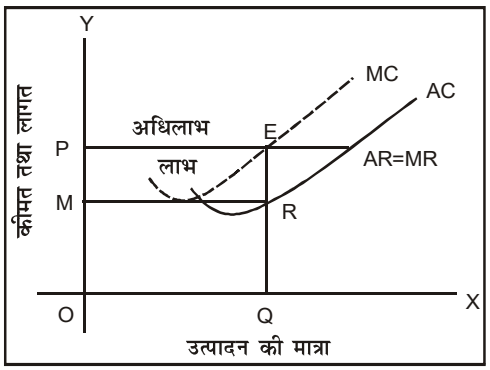

यहाँ पर जब बाजार में वस्तु की कीमत OP है, तो उत्पादन की मात्रा OQ के E बिन्दु पर है। इस बिन्दु पर MR=MC है। इस मूल्य पर AC (औसत लागत) AR से (औसत आय) कम है। अत: फर्म को प्रति इकाई ER लाभ प्राप्त होता है।

(2) सामान्य लाभ–जब बाजार में माँग और पूर्ति दोनों आपस में बराबर होते हैं, तो फर्म को सामान्य लाभ प्राप्त होता है।

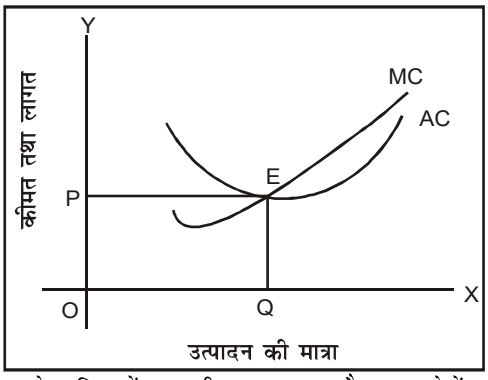

उपरोक्त चित्र में OP कीमत पर MC और MR दोनों E बिन्दु पर मिलते हैं, यहाँ उत्पादन मात्रा OQ है। इस उत्पादन पर फर्म की कीमत OP =AR = MR = MC =AC है, अत: फर्म को केवल सामान्य लाभ प्राप्त हो रहा है।

(3) हानि की दशा–जब बाजार में वस्तु की माँग, पूर्ति की तुलना में कम होती है, तो फर्म को हानि होती है।

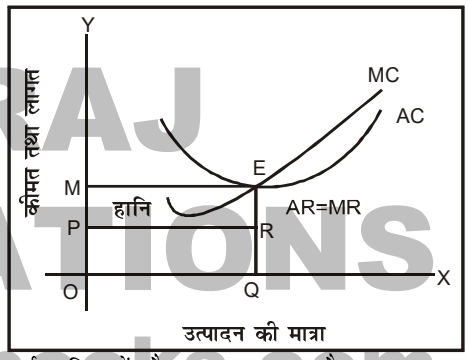

उपर्युक्त चित्र में औसत आय (AR) औसत लागत (AC) की तुलना में कम है। अत: फर्म को हानि होगी। यहाँ पर फर्म को MPRE के बराबर कुल हानि होती है।

AR – AC = लाभ

AC – AR = हानि

AR = AC = सामान्य लाभ

(ख) दीर्घकाल में मूल्य निर्धारण–दीर्घकालीन अवस्था इतनी लंबी समय अवधि है, जिसमें माँग के अनुरूप पूर्ति को समायोजित किया जा सकता है। फर्मों के स्वतंत्र प्रवेश एवं बहिर्गमन के कारण नई फर्में आ सकती हैं। फर्म या उद्योग इस स्थिति में केवल सामान्य लाभ की दशा में कार्यरत रहता है। यदि अल्पकाल में फर्म या उद्योग को अधिकतम लाभ हो रहा है, तो ऐसी दशा में नई फर्में उद्योग में आने लगेंगी, जिससे पूर्ति बढ़ जायेगी और मूल्य कम हो जाने से लाभ भी कम हो जायेगा। यदि अल्पकाल में फर्म हानि पर भी कार्य कर रही है, तो वह दीर्घकाल तक हानि की दशा में नहीं रहेगी अर्थात दीर्घकाल की प्रवृत्ति सामान्य लाभ की होती है।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

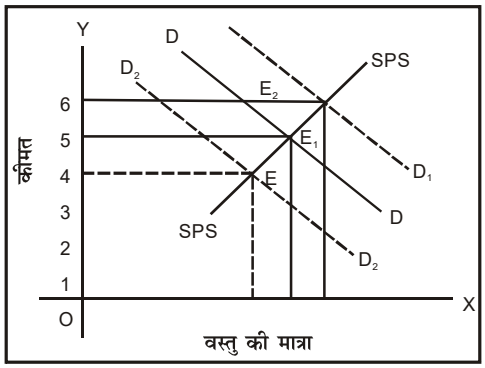

दीर्घकाल में पर्याप्त समय होता है, अत: वस्तु की माँग और पूर्ति दोनों आपस में बराबर होती हैं। अत: फर्म को यहाँ पर केवल सामान्य लाभ प्राप्त होता है। इसे उपरोक्त रेखाचित्र के द्वारा दिखाया जा सकता है। यदि माँग बढ़ती है, तो कीमत भी बढ़ जायेगी।

प्रश्न 4. पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत अल्पकाल में उद्योग के संतुलन या मूल्य निर्धारण का वर्णन कीजिये।

उत्तर–पूर्ण प्रतियोगिता में उद्योग का संतुलन–किसी एक वस्तु का उत्पादन करने वाले सभी फर्मों के समूह को उद्योग कहते हैं। पूर्ण प्रतियोगिता में बहुत-सी प्रतियोगी फर्मों का समूह उद्योग कहलाता है। उद्योग का अर्थ जान लेने के बाद हमें उद्योग के संतुलन का अर्थ समझना होगा। प्रो. बोल्डिग के अनुसार, "एक उद्योग संतुलन की स्थिति में उस समय कहलाता है, जब उसके विस्तार एवं संकुचन की कोई प्रवृत्ति नहीं होती है।" इसे हम दूसरे शब्दों में इस प्रकार कह सकते हैं कि जब किसी उद्योग का उत्पादन न तो बढ़ रहा हो और न ही घट रहा हो, बल्कि स्थिर हो तब वह उद्योग संतुलन की स्थिति में होता है। उद्योग का कुल उत्पादन उस समय स्थिर रहता है, जब उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु की कुल पूर्ति उसकी कुल मांग के बराबर हो।

अल्पकाल में उद्योग का संतुलन–एक उद्योग अल्पकाल में संतुलन की स्थिति में उस समय होता है, जब अल्पकाल में उसका उत्पादन स्थिर हो जाता है तथा उसमें परिवर्तन की कोई शक्ति क्रियाशील नहीं रह जाती है। चूंकि उद्योग का उत्पादन सभी फर्मों के उत्पादन का योग होता है, अत: यह स्थिर तब होता है, जब अल्पकाल में फर्मों का उत्पादन स्थिर हो जाये। अल्पकाल में भी फर्मों का उत्पादन तब स्थिर होता है, जब वे सभी फर्में अल्पकालीन संतुलन की स्थिति में हों और ऐसा तब होता है, जब फर्मों की सीमांत लागत उनकी अपनी सीमांत आगम के बराबर हो। संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि अल्पकाल में उद्योग में लगी सभी फर्में संतुलन की स्थिति में होती हैं और उद्योग भी अल्पकालीन संतुलन की स्थिति में होता है। प्रो. वाटसन के शब्दों में, "एक उद्योग अल्पकाल में उस समय संतुलन की स्थिति में होता है, जब उद्योग का उत्पादन स्थिर हो जाता है, उत्पादन के विस्तार अथवा संकुचन के लिए कोई शक्ति क्रियाशील नहीं रहती है। यदि सभी फर्म संतुलन में हों तो उद्योग भी संतुलन में होता है।"

अल्पकाल में एक फर्म संतुलन की स्थिति में अधिसामान्य लाभ, सामान्य लाभ अथवा हानि उठाती हुई हो सकती है, अत: अल्पकालीन उद्योग के संतुलन की स्थिति में अधिसामान्य लाभ अथवा हानि का सह-अस्तित्व हो सकता है। उद्योग की सभी फर्मों को अल्पकाल में केवल सामान्य लाभ ही प्राप्त होता हो तो यह उद्योग की पूर्ण संतुलन की स्थिति होती है, जो केवल संयोग ही होता है। उद्योग के अल्पकालीन संतुलन की स्थिति में उद्योग की अल्पकालीन कुल माँग एवं कुल पूर्ति बराबर होती है। अत: यहाँ उद्योग की कुल माँग एवं पूर्ति का अध्ययन किया जा सकता है।

अल्पकाल में उद्योग का माँग वक्र–उद्योग का अल्पकालीन माँग वक्र बाजार में उस वस्तु के उपभोक्ताओं के व्यक्तिगत माँग वक्रों का क्षैतिज योग होता है। यह वक्र यह बताता है कि विभिन्न मूल्यों पर उपभोक्ता कितनी-कितनी मात्राएं खरीदने को तैयार हैं। यह वक्र बायें से दायें को नीचे की ओर गिरता हुआ होता है, जो यह बताता है कि वस्तु का जैसे-जैसे मूल्य गिरता है, वैसे-वैसे वस्तु की माँग बढ़ती है।

अल्पकाल में उद्योग का पूर्ति वक्र–उद्योग में लगी सभी फर्मों के व्यक्तिगत पूर्ति वक्रों का क्षैतिज योग उद्योग का पूर्ति वक्र होता है। यह वक्र प्रदर्शित करता है कि विभिन्न मूल्यों पर सभी फर्में वस्तु की कितनी-कितनी मात्राएं बेचने को तैयार हैं। अल्पकाल में सभी फर्मों का पूर्ति वक्र उनकी सीमांत लागत की प्रकृति के अनुसार बायें से दायें को ऊपर उठता हुआ होता है, जो यह बताता है कि जैसे-जैसे मूल्य बढ़ता है, वैसे-वैसे उद्योग द्वारा वस्तु की पूर्ति में वृद्धि होती है, परंतु अल्पकाल में समयाभाव के कारण यह वृद्धि केवल परिवर्तनशील साधनों की मात्रा में परिवर्तन करके ही की जा सकती है।

उद्योग का अल्पकालीन संतुलन की आरेखीय प्रस्तुति–उद्योग के माँग एवं पूर्ति वक्रों का अध्ययन करने के बाद अब हम रेखाचित्र की सहायता से उद्योग के संतुलन की व्याख्या कर सकते हैं। रेखाचित्र में DD उद्योग का माँग वक्र है तथा SS उद्योग का पूर्ति वक्र है। DD वक्र ने SS वक्र को E बिन्दु पर काटा है, अत: E साम्य बिन्दु है। उद्योग के साम्य में होने के लिए यह आवश्यक है कि उद्योग में लगी सभी फर्में भी संतुलन की स्थिति में हों। फर्में अल्पकालीन संतुलन की स्थिति में अधिसामान्य लाभ, सामान्य लाभ अथवा हानि उठाती हुई हो सकती हैं। चित्र में एक प्रतिनिधि फर्म के संतुलन की स्थिति दिखाई गई है।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com